1522
10/01

विभाग संत्रालय
DEPARTMENT/MINISTRY

शाखा
Hindi BRANCH

संत्रणा संग्रह
Consultation/Collection Proscribed Publication

संख्या
No. 1291

दिनांक
Date (84) (P)

विषय
Subject गोरे कुत्तों का हरामीपन

पूर्व निर्देश
Previous reference

बाद का निर्देश
Later reference

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 1281
Date 10.1.72
GOVT. OF INDIA

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED
25 AUG 1930

गोरे कुत्तों का हरामीपन।

(पढ़िये और दूसरों को पढ़ाइये)

तुम दग़ाबाज़ मक्कार सितमगर बेईमान ज़ालिम हत्यारे,
डाकू चोर गिरहकट जालिम बेदीन लुटेरे आवारे।
दोज़ख के कुत्ते खुदगर्ज़ी बेरहम दग़ाबाज़ मक्कारे,
खूंगर तोते चश्म हरामी रहज़न ज़ाहिल गद्दारे॥
तुम्हीं हिन्द में बन सौदागर आये थे टुकड़े खाने,
फिर दौलत देख २ कर मेरी लगे दिल में ललचाने।
लगा फूट का पेड़ हिन्द में अग्नि ईर्ष्या बरसाने,
फोड़े मंत्री राजाओं से गोलंदाज़ों को भड़काने॥
हमें फरेबी जाल सिखा कर भाई से भाई लड़वाया,
करके दखल मुल्क पर मेरे हमको ठेंगा दिखलाया।
बंग भंग करके किसने नन्द कुमार को फांसी दी?
किसने टिकेन्द्र जीत सिंह को मारा लक्ष्मीबाई झांसी की?
किसने रणजीत सिंह के बेटे यूरोप भिजवाये धोखे से?
नाना बाजीराव पेशवा किसने मारे धोखे से?
देवी मैनावती को बोलो जीते ही जलाया किसने था?
भारत भूमी रक्त के आंसू हाय रुलाया किसने था?
निरापराध किसानों को तोपों से उड़ाया किसने था?
बेगुनाह भारत के बेटे क़त्ल कराया किसने था?
कुंवर सिंह से राजभक्त को बागी कह कर मारा था?
अवध नवाब के घर में डाका रात को किसने डाला था?
आसफ़ उद्दौला की बूढ़ी मां का ज़ेवर कौन उतारा था?
वाजिद अली शाह के घर का किसने ताला तोड़ा था?
पेड़ इलाहाबाद चौक के अभी गवाही देते हैं,
अरु खूनी दरवाजा देहली वाले घूंट का पीते हैं॥
अजनाले के खोहों में किसने भाई हमारे तोपे थे,
अब्दुल खां और शम्भू शुक्ल के सर रेती लेकर रेते थे।
चालीस गज़ का गढ़ा किसने कानपूर में खोदा था,
स्तन काट नारियों का किसने जीते जी ही तोपा था॥
बच्चों की लाशें टांग किर्च पर शहर में कौन घुमाता था,
आग लगा कर लूटा जिसने जब आलम सारा सोता था।
और जलियां बाग में किसने बे कारण ही फायर की,
दिल दीवारों के भी फड़के देख क्रूरता डायर की॥
है अभी चीखती रात समय हर एक आत्मा घायल की।
करतूत कहां तक करूं बयां इस जाति फिरंगी कायर की?
सी०आर० दासको डाक्टर के जरिये जहर दिलाने वाला कौन?
पंजाब केशरी के वक्षस्थल पर लट्ठ चलाने वाला कौन?
मुकद्मा करके जमीं के ऊपर हमें चढ़ाने वाला कौन?
पिता के सम्मुख पुत्र रत्न की खाल खिंचाने वाला कौन?
है कल की बात अभी ताजी कलकत्ता गाड़ीवानों की।
क्या यही नीति है सभ्य और इन्साफी इन्सानों की?
अब खुली आंख है भोर गई हम भारत के सन्तानों की,
बस जमीं आसमां पर भी जालिम खैर न तेरे प्राणों की।
एक बूंद खून के बदले तेरा घट भर खून बहाऊंगा,
जब तक तुझको मिटा न लूंगा किंचित चैन न पाऊंगा॥
यह सत्य प्रतिज्ञा भारत को है करके सत्य दिखाऊंगा।
करके स्वाधीन भूमि भारत को विजय ध्वजा फहराऊंगा॥

बेचैन युवक,

उत्साही प्रेस,